संकट मोचन हनुमानाष्टक

संकट मोचन हनुमानाष्टक
बाल समय रवि भक्षी ललयो तब,
तीनह ुंलोक भयो अुंधियारों ।
ताहह सों त्रास भयो जग को,
यह सुंकट काह सों जात न टारो ।
देिन आनन करी बबनती तब,
छाडी हदयो रवि कष्ट ननिारो ।
को नहीुंजानत है जग में कवि,
सुंकटमोचन नाम नतहारो ॥ १ ॥

बालल की त्रास किीस बसैं धगरर,
जात महाप्रभ िुंथ ननहारो ।
चौंकक महाम नन साि हदयो तब,
चाहहए कौन बबचार बबचारो ।
कैद्विज रूि ललिाय महाप्रभ ,
सो त म दास केसोक ननिारो ॥ २ ॥

अुंगद केसुंग लेन गए लसय,
खोज किीस यह बैन उचारो ।
जीित ना बधचहौ हम सो ज ,
बबना स धि लाये इहाँ िग िारो ।
हेरी थकेतट लसन्ि सबै तब,
लाए लसया-स धि प्राण उबारो ॥ ३ ॥

रािण त्रास दई लसय को सब,
राक्षसी सों कही सोक ननिारो ।
ताहह समय हन मान महाप्रभ ,
जाए महा रजनीचर मारो ।
चाहत सीय असोक सों आधग स ,
दै प्रभ म हिका सोक ननिारो ॥ ४ ॥

बान लग्यो उर लनछमन केतब,
प्राण तजे स त रािन मारो ।
लै गृह बैद्य स षेन समेत,
तबै धगरर िोण स बीर उिारो ।

आनन सजीिन हाथ दई तब,
लनछमन केत म प्रान उबारो ॥ ५ ॥

रािन य द्ि अजान ककयो तब,
नाग कक फाँस सबै लसर डारो ।
श्रीरघ नाथ समेत सबै दल,
मोह भयो यह सुंकट भारो।
आनन खगेस तबै हन मान ज ,
बुंिन काहट स त्रास ननिारो ॥ ६ ॥

बुंि समेत जबै अहहरािन,
लै रघ नाथ िताल लसिारो ।
देबबहहुं िूजज भलल विधि सों बलल,
देउ सबै लमलल मन्त्र विचारो ।
जाय सहाय भयो तब ही,
अहहरािन सैन्य समेत सुंहारो ॥ ७ ॥

काज ककये बड देिन केत म,
बीर महाप्रभ देखख बबचारो ।
कौन सो सुंकट मोर गरीब को,
जो त मसे नहहुं जात है टारो ।
बेधग हरो हन मान महाप्रभ ,
जो कछ सुंकट होय हमारो ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

लाल देह लाली लसे,
अरु िरर लाल लुंगूर ।
िज्र देह दानि दलन,
जय जय जय कवि सूर ॥